शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पालि साहित्य में गृहस्थ विनय : एक अध्ययन

लोकेश कुमार (शोधार्थी)
पालि-प्राकृत विभाग
राष्ट्रसन्त तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय
नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म में गृहस्थविनय को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। शास्ता के द्वारा समय-समय पर उपदेशित किया गया है। बुद्धोपदिष्ट गृहस्थविनय एक जीवन मार्ग है जिसका विशेष महत्व है। गृहस्थविनय का अनुशीलन जीवन में बहुत ही अनिवार्य है। बुद्धोपदिष्ट गृहस्थविनय धर्म का अनुशीलन किये बिना मानव सुखशान्तिपूर्ण जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता है। बुद्धोपदिष्ट गृहस्थविनय के सम्यक् अनुशीलन से ही गृहस्थ जीवन को क्लेशमुक्त करके, सभ्य, उत्तम, सौहादर्यपूर्ण एवं मंगलमय बनाने का सपना पूर्ण किया जा सकता है जिससे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया जा सकता है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की वाणी विनय के रूप में भी दी गयी है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने अकुशल चैतासिकों के विनाश एवं कुशल धर्मों के उत्पाद के अर्थ में विनय रूपी धर्म की देशना की है।

मुख्य शब्द : *शाक्यमुनि गौतम बुद्ध, गृहस्थविनय, सुत्तपिटक, दीघनिकाय, सिगालोवादसुत्त, महामंगलसुत्त, पराभवसुत्त, संवाससुत्त, कूटदन्तसुत्त, मेत्तसुत्त, धम्मिकसुत्त, निधिकण्डसुत्त, ब्रह्मजालसुत्त, पंचशील, उपोसथशील, सात अपरिहाणीय धर्म, दस पारमिताएँ, आर्य अष्टांगिक मार्ग, दस संस्कार।*

प्रस्तावना

संसार का प्रत्येक प्राणी सुखी रहना चाहता है। नैतिकता से परिपूर्ण कुशल कर्म ही सुखी मानव जीवन की आधारशिला है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि सदाचार के सम्यक् अनुशीलन के अभाव में व्यक्ति के लिए कुशल कर्मों का सम्पादन सम्भव नहीं है। उन्होंने मानव जीवन को सुखमय बनाने हेतु सत्य धर्म का उपदेश किया। उनके धर्म का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को सुखमय व कल्याणकारी बनाना है। उन्होंने इस सद्धर्म की देशना केवल प्रव्रजितों के लिए आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति प्राप्ति करने हेतु ही नहीं, अपितु गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी सुखमय एवं शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने हेतु गृहस्थ धर्म का उपदेश किया है। बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म में वर्णित गृहस्थविनय का सम्यक् रूप से अनुशीलन एवं सम्पादन करने से व्यक्ति अपने जीवन में विद्यमान समस्याओं से छुटकारा पा सकता है। यह सर्वविदित है कि पालि तिपिटक साहित्य में वर्णित विषयवस्तु में गृहस्थविनय को विशेष रूप से देखा जा सकता है।

'विनय' शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों से मिलकर हुई है। "विनय शब्द 'वि' उपसर्गपूर्वक 'नी' धातु से 'अच्' प्रत्यय लगाकर व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है - विशिष्टतापूर्वक ले जाना।' 'विनय' शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों 'वि' एवं 'नी' के सम्मिलन से अस्तित्व में आयी है। 'विनय' शब्द की उत्पत्ति 'विनेति' से हुई है जिसका अभिप्राय 'शिक्षित करता है' होता है। 'विनय' शब्द का अभिप्राय 'भिक्षु जीवन के नियम-उपनियम',

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शिक्षापद, 'अनुशासन', 'नियम', 'जितेन्द्रिय', आत्म-संयम, अर्थात् 'प्रशिक्षण', 'नम्रता', 'संयमी' एवं शिष्टाचार होता है।

धम्म एवं विनय

धम्म एवं विनय का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। सद्धर्म की आयु एवं उपादेयता विनय पर निर्भर होती है। धम्म के अभाव में विनय का अनुशीलन सम्यक्रूपेण सम्भव नहीं हो पाता है। विनय एक ऐसी आचार-संहिता है, जो व्यक्ति को मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक रूप से नियन्त्रित एवं अनुशासित बनाये रखती है। अकुशल कर्मों से विरत रहने तथा कुशल कर्मों में संलग्न होने का मूल हेतु है। विनय शब्द का अभिप्राय मन, वचन एवं शरीर को अकुशल धर्मों से विरत रखना होता है।

गृहस्थ विनय

बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ-विनय धर्म में 'गृहस्थ' शब्द का अभिप्राय गृह में रहना, स्थित, ठहरना, रुकना या पकड़कर रखना 'ग्रहण करना'1 होता है। पालि में गृहस्थ को 'गहठ'2 कहा जाता है, अर्थात् यह दो शब्दों 'गह' और 'ठा' से मिलकर बना है, जिसमें गह शब्द का अर्थ 'पकड़ना'3, और ठा शब्द का अर्थ 'खड़ा होना या स्थिर होना'4 अर्थात् गृहस्थ उस पुरुष को कहाजा सकता है, जो कि-घर, परिवार में रहकर, सांसारिक विषय-भोगों में उलझा रहता है, एवं लौकिक व्यवहार में व्यक्ति कामी भाव होता है। लौकिक-दृष्टि से इस कामीभाव को न त्याग सकने वाला पुरुष ही 'गृहस्थ कहलाता है, गृहस्थ व्यक्ति को 'सुत्तनिपात में सपरिग्रहीऽ कहा गया है अर्थात् 'श्रावक की तुलना में गृहस्थ 'सपरिगही' होता है। 'श्रावक अपरिगही कहा जाता है। यहाँ सपरिग्रह का तात्पर्य उपादानों से है। संसार में चार प्रकार के उपादान हैं। उपादान वह धर्म है जो आलम्बन में 'दृढ़तापूर्वक' ग्रहण किये रहता है। इन्हीं चार 'कामोपादान, दृष्टयुपादान, शीलव्रतोपादान एवं आत्मवादोपादान।'6 इन धर्मो से गृहस्थ पुरुष सम्बद्ध होता है। इस प्रकार से लोक व्यवहार में गृहस्थ पुद्गल कामवासना में लिप्त रहकर कामवासना से दूर न हटने वाला होता है। इसी प्रकार गृहस्थ व्यक्ति मिथ्या शीलव्रतों से जकडे रहते हैं।

गृहस्थ का शाब्दिक अर्थ 'गृहीजीवन' होता है, यानि गृह सम्बन्धी जीवन से है। ऐसा जीवन जिसमें व्यक्ति माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, बच्चे एवं अन्य परिवारीजनों के साथ सह-संबन्धित रूप से रहता है। वह गृहीपुरुष या गृहस्थ कहलाता है। प्राणी व्यक्तिगत रिस्तों के साथ-साथ अन्य पारिवारिक, खानदानी एवं सामाजिक सम्बन्धों में मेल-जोल एवं भाई-चारे के साथ निवास करता है, उसे गृहस्थ जीवन कहा जाता हैं। अतः हम कह सकते है कि ऐसा जीवन जिसमें प्राणी पारिवारिक, सामाजिक एवं अन्य सम्बन्धों को सम्यक् रूप से निभाता हुआ जीवनयापन करता है, वह गृहस्थ जीवन कहलाता है। इन सम्बन्धों को समझकर उनके प्रति पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाता है, वही व्यक्ति एक उत्तम गृहस्थ कहलाता है। वह प्राणी जो गृहत्याग किये बिना जीवन निर्वाह करता है। मनुष्य अपने घर-परिवार में निवास करता हुआ, जीवनयापन करता है। पुद्गल अपने घर-परिवार के सदस्यों के साथ रहता हुआ, समस्त कार्यो को सम्यक् तरीके से पूर्ण करता है; तो ऐसा पुद्गल 'गृहस्थ कहलाता है।

व्यक्ति को उत्तम प्रकार का गृहस्थ बनाने में बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय महत्वपूर्ण भूमिका

निभाता है। जिसके द्वारा व्यक्ति सांसारिक छोटे-बडे नाते-रिश्ते न त्यागकर उन्हें यथासम्भव पूर्ण करने के प्रति जिम्मेदार बनता जाता है। जीवन के इन सम्बन्धों में अपने आचार-व्यवहार से मधुरता एवं मजबूती प्रादुर्भूत करने में तत्पर हो जाता है। गृहस्थ-विनय एक ऐसी आचार-संहिता है। जिसके सम्यक अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं को मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक रूप से नियन्त्रित एवं अनुशासित बनाये रखता है। अकुशल कर्मो में संलग्न होने से विरत रखता है। गृहस्थ पुरुष जीवन में नाना प्रकार की कामनाओं से ग्रस्त होता है। गृहस्थ व्यक्ति श्रमण की तरह समस्त धर्मो को पालन नहीं कर सकता है।

बुद्धोपदिष्ट गृहस्थविनय सामान्य जन-मानस के लिए उत्तम जीवन चर्या का आधार है। गृहस्थ-विनय मानवीय मूल्यों का प्रतिपादक है। गृहस्थ-विनय धर्म जीवन पद्धति का बेजोड़ उपाय है। जिसका सम्यक् अनुशीलन मानव जीवन में मानवीयता का उदय करता है। सामान्य गृहस्थ पुरुष की दैनिक चर्या से परिचित कराता है। शास्ता ने जनमानस के अभ्युदय और जीवनशैली की देशना विभिन्न सुत्तों के माध्यम से की है, इन सूत्रों में मानव विकास की देशना प्राप्त होती है, इनमें गृहस्थोपयोगी विनय का दर्शन होता है। शास्ता द्वारा उपदेशित गृहस्थ-विनय मानव के उत्थान का परिचायक है जिसमें मानव का आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक उत्थान होता है।

गृहस्थ-विनय शब्द में अकुशल भावनाओं के प्रहाण का भाव समाहित है। व्यक्ति विशेष इसका अनुशीलन करके अपने आप को संयमित और अनुशासित करता है। शिक्षापदों को जिनसे मानव के जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। मानव जीवन में अकुशल धर्मो का प्रहाण करके अनुशासित रहकर कुशल धर्मो में संलग्न हो सके, जिन पापधर्मो के अनुशीलन से अशान्ति एवं दुखित होता है, ऐसे धर्मो का आचरण त्यागना एवं पुण्यधर्मो के सेवन करने में ही विनय के नियमों की सार्थकता है। गृहस्थविनय एक ऐसी आचार सम्बन्धी नियमावली है। जिससे व्यक्ति स्वयं अपनी इन्द्रियों को वश में रखकर पवित्र जीवन व्यतीत करता है। गृहस्थ-विनय के द्वारा इन्द्रियों के अकुशल प्रवृत्ति पर अंकुश रखकर सुमार्ग पर लगाकर जितेन्द्रिय बनने में मदद करता है।

गृहस्थ-विनय धर्म व्यक्ति को सत्य, धर्म, धैर्य और त्याग की तरफ ले जाने के लिए प्रेरित करता है। गृहस्थ धर्म सत्य धर्म, धृति और त्याग को धारण करने के लिए धैर्य एक पथ प्रदर्शक है। गृहस्थ-विनय सत्य, धर्म, धैर्य और त्याग जैसे कुशल धर्मो के अनुशीलन के लिए प्रतिबद्ध करता है, जिसका अनुसरण करके व्यक्ति अपने शारीरिक और मानसिक व्यक्तित्व को उज्ज्वल बना सकता है। गृहस्थ-विनय धर्म सत्य के साथ धर्म को धारण करने की सीढ़ी है। यह धर्म में श्रद्धाभाव प्रादुर्भूत करने के लिए प्रेरणास्रोत है। व्यक्ति की अकुशल प्रवृत्तियों का नाश कर कुशल प्रवृत्तियों के उत्पादक का हेतु है। अमानवीय धर्मो का प्रहाण करने तथा अनुत्पन्न मानवीय कुशल प्रवृत्तियों की उत्पत्ति करता है। दुराचारी जीवन त्यागकर सदाचारी जीवन के लिए शिक्षित करता है, इसके अलावा सच्चरित्र को पैदा करने तथा दुश्चरित्र को समूल नाश करने का बुनियादी उपाय कहलाता है। गृहस्थविनय अकुशल मानसिक प्रवृत्तियों का हनन करके कुशल चैतिसिकों विकसित करता है तथा गृहस्थविनय का पालन करने वाला व्यक्ति श्रद्धा भावना से परिपूर्ण रहता है। इस प्रकार से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहा जा सकता है कि बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ-विनय का अनुशीलन आवश्यक और अपरिहार्य है।

गृहस्थ विनय और सुत्तपिटक

बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय का सुत्तपिटक7 से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। सुत्तपिटक में बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय का बाहुल्य देखा जा सकता है। सुत्तपिटक में वर्णित प्रमुख उपदेशों को सिगालोवादसुत्त8, महामंगलसुत्त, पराभवसुत्त, संवाससुत्त, कूटदन्तसुत्त, मेत्तसुत्त, धम्मिकसुत्त, निधिकण्डसुत्त, ब्रह्मजालसुत्त के रूप में जाना जाता है, ऐसे महत्वपूर्ण सुत्तों के माध्यम से बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय को जाना जा सकता है। बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय के अन्तर्गत अनुकरणीय धर्मों के रूप में गौतम बुद्ध ने पंचशील, उपोसथशील, सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि, सात अपरिहाणीय धर्म, दस पारमिताओं एवं दस संस्कारों आदि को अपने उपदेशों में भलीभाँति बताया है। यह सत्य है कि शास्ता द्वारा प्रतिपादित पंचशील का पालन सामाजिक जीवन के लिए अनिवार्य ही नहीं, बल्कि मौलिक धर्म हैं; क्योंकि नैतिकता ही सामाजिक जीवन की आधारशिला है। सामाजिक जीवन को उपयोगी एवं सार्थक बनाने के लिए मृदुभाषी एवं सम्यक् कर्मों के साथ-साथ जीविका की शुद्धता को ही उत्तरदायी बतलाया है। विनयशील, सुशिक्षित एवं मृदु वचन बोलना मंगलदायी बतलाया गया है। गौतम बुद्ध ने गृहस्थ के लिए अपरिहानिय धर्मों को भी अनिवार्य बताया है। दीघनिकाय9 के महापरिनिब्बाणसुत्त में वर्णित अपरिहानिय धर्म से तात्पर्य पतन विरोधी नियम10 होता हैं। जिन धर्मों के सम्यक् अनुशीलन के उपरान्त परसत्व के द्वारा हानि असम्भव हो, ऐसे पवित्र नियम अपरिहानिय धर्म कहलाते हैं अर्थात् जो पुरुष अपरिहानिय धर्मो का सम्यक् रूप से पालन करता है, उस पुरुष का पतन होना असम्भव होता है। बुद्धोपदिष्ट अपरिहानिय धर्मों में प्राणी की व्यक्तिगत और सामाजिक वृद्धि निहित है। शास्ता द्वारा उपदेशित गृहस्थ-विनय में अपरिहानिय एक कुशल धर्म हैं। सात अपरिहानिय धर्मों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है - एकतायुक्त रहना, एकतायुक्त होकर सभाएँ करना, अप्रज्ञप्त को प्रज्ञप्त न करना और प्रज्ञप्त को अप्रज्ञप्त न करना, वृद्धों का सत्कार करना, स्त्रियों का सम्मान करना, चैत्यों का सत्कार करना एवं धर्मबलि को अप्रज्ञप्त न करना एवं बुद्ध, अर्हत एवं साधुजनों की रक्षा एवं सत्कार करना। मनुष्य के मंगलमय जीवन तथा धार्मिक आचरण से ओतप्रोत पवित्र जीवन की कामना का भाव संस्कारों में निहित होता हैं। संस्कार मनुष्य के शुद्धिकरण के साथ-साथ निरोग और खुशहाल जीवन की धार्मिक भावना है। संस्कार मनुष्य के समस्त क्रिया-कलापों की शुद्धता का द्वार माना जाता है। इसी पवित्र उद्देश्य से निम्न संस्कारों को जीवन में प्रधानता दी गयी हैं वे निम्न हैं - गर्भमंगल संस्कार, नामकरण संस्कार, कर्णछेदन संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, केशकप्पन संस्कार, विद्यारम्भ संस्कार, विवाह संस्कार, प्रव्रज्या संस्कार, उपसम्पदा संस्कार एवं मृतक संस्कार। संस्कार मानव जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम अवस्था तक पूर्ण किये जाते है, जिनका अत्यधिक महत्व होता है। अष्टांगिक मार्ग गृहस्थ के लिए जीवन जीने का उत्तम रास्ता प्रशस्त करता है। आर्य अष्टांगिक मार्ग वह उपाय है, जिससे गृही-जीवन अधिक सुगम बनाता है। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प,

सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि से युक्त मार्ग ही आर्य अष्टांगिक मार्ग है।11

निष्कर्ष

इसी प्रकार बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय के सम्यक अनुशीलन से आध्यात्मिक क्षेत्र के विकास करके उच्चतम उपलब्धि पा सकता है। यदि गृहस्थ पुरुष भी बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय का भलीभाँति आचरण करके जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यह उपलब्धि बहुत ज्यादा होती है; क्योंकि आध्यात्मिक शुद्धता जीवन के विविध क्षेत्र यथा - नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक और भौतिक तथा शान्तपद की तरफ अग्रसर होने का मूलाधार होता है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ विनय का सम्यक्रूपेण अनुशीलन करे, तो समाज में सर्वत्र सुख-शान्ति के वातावरण को स्थापित किया जा सकता है। मानव जीवन में व्याप्त व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का निदान भी गृहस्थ-विनय के सम्यक् अनुशीलन के द्वारा किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भिक्षु जगदीश काश्यप, पालि महाव्याकरण, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, 2000, पृष्ठ 104

2. सुत्तनिपात (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, 2003, पृष्ठ 98

3. भिक्षु जगदीश काश्यप, पालि महाव्याकरण, वही, पृष्ठ 103

4. वही, पृष्ठ 104

5. सुत्तनिपात, वही, पृष्ठ 98

6. अभिधम्मत्थसंगहो (सम्पादक एवं अनुवादक) भदन्त रेवतधम्म एवं रामशंकर त्रिपाठी, वाराणसीः सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय 1991, पृष्ठ 740

7. गन्धवंस (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस 2017, पृष्ठ 28

8. लोकेश कुमार, बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ-विनय की मानव जीवन में प्रासंगिकता, निब्बाण-बोधिः रिसर्च जर्नल ऑफ़ रिलीजन, फिलोसफी एण्ड सोशल साईन्सस, 2015, वॉल्यूम ix (सम्पादक) भिक्खु नन्दरतन थैर (सह-सम्पादक) ज्ञानादित्य शाक्य, कुशीनगरः कुशीनगर भिक्षु-संघ, पृष्ठ 116-126

9. उमादत्त शाक्य, पालि वंस-साहित्य का इतिहास, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस 2017, पृष्ठ 4

10. महापरिनिब्बाणसुत्तं (सम्पादक एवं अनुवादक) वाराणसीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1988, पृष्ठ 10

11. नामरूपसमास (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 44